

8 मार्च महिला दिवस पर विशेष

अहिंसा से विश्व शांति एवं पर्यावरण शुद्धि



परम पूजनीय, गणिनी प्रमुख, 105 ज्ञानमति माताजी द्वारा आयोजित आलेख लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध -

जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है, यह बात वर्षों से कही और समय समय पर परखी जाती रही है। जैनागम में वर्णित पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को वैज्ञानिक शब्दावली में पर्यावरण के अजैव घटक कहा जाता है। जैव घटकों में हरित वनस्पति और जीव जंतु आते हैं जो इन अजैव घटकों के साथ रहते हैं। आगम में षट्काय के जीवों का वर्णन किया है त्रस जीव और स्थावर जीव। स्थावर जीव पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक हैं जो क्रमशः मिट्टी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में रहने वाले एकइन्द्रिय जीव हैं। त्रस जीवों में एक इन्द्रिय से लेकर पांच इन्द्रिय वाले अनेक जीव और मनुष्य हाते हैं। इन षट्काय के जीवों की हिंसा को रोकना ही जैनधर्म के अनुसार अहिंसा है। अहिंसा से न केवल जीव जन्तु और वनस्पति की रक्षा होती है वरन यह संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित करने का अच्छा अस्त्र है। जैन धर्म में वर्णित अहिंसा में सूक्ष्म जीवों से लेकर मानव मात्र के लिए रक्षा का भाव निहित रहता है जो हिंसा और युद्ध से आक्रांत मानव जाति को विश्व शांति का मार्ग दिखाती है और संपूर्ण विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश देती है। इस प्रकार सभी जीवों के प्रति अहिंसा भाव रखने से पर्यावरण की रक्षा भी स्वतः हो जाती है। पर्यावरण के विधिक घटकों द्वारा इसको स्पष्ट करने के लिये सभी का अलग अलग विवेचन आवश्यक है।

पृथ्वीकायिक जीव धरती में, मिट्टी में रहते हैं। मिट्टी अत्यंत सूक्ष्म जीवों जैसे बैक्टीरिया से लेकर बड़े जीव जंतुओं का आवास है। मिट्टी को खोदना, खदान-चट्टानों का खनन, कृषि भूमि का जोतना, बाग बगीचे की मिट्टी की निदाई गुड़ाई इत्यादि क्रियाओं से पृथ्वीकायिक जीवों का घात होता है और हिंसा का दोष लगता है। इसलिए जैनागम के अनुसार इन क्रियाओं में संयम बरतना चाहिए। अनावश्यक रूप से, अकारण और गैरजरूरी हिंसा से बचना चाहिए।

जल में रहने वाले जीव जलकायिक होते हैं। जलीय जीवों मछली, मगर इत्यादि के अलावा जल में अत्यंत सूक्ष्म जीव भी रहते हैं जो हमारी दृष्टि में नहीं आते। इसलिए जैन धर्म के अनुयायी दोहरे कपड़े से छने हुए जल का ही प्रयोग करते हैं और बिलछानी को भी मूल जल स्रोत में वापस डालते हैं ताकि उस स्रोत के जीव अपने ही स्थान पर जीवित रह सकें और जलकायिक जीवों की हिंसा से बचा जा सके। विज्ञान ने भी आज जैनागम के इस सूक्ष्म विवेचन को स्वीकार किया है। जल का अनर्गल उपयोग या कर्हें

दुरुपयोग जलकायिक जीवों की हिंसा का कारण होता है। साथ ही जल स्रोतों के अनावश्यक दोहन से शुद्ध जल की कमी होने लगती है। कारखानों, फैक्ट्री आदि की रासायनिक पदार्थों से युक्त अशुद्ध और अत्यधिक गर्म जल, जल स्रोतों को प्रदूषित करता है जिससे अनेक जीवों की हिंसा होती है। जैनागम में गर्म और ठंडे जल को मिलाने से अचित सचित के दोष की बात इसी तथ्य की ओर इंगित करती है।

अग्निकायिक जीव अग्नि में रहते हैं। बिना देखे या विचार के अग्नि जलाना या अनावश्यक रूप से अग्नि जलाने से इन जीवों की हिंसा होती है, साथ ही अग्नि से उत्पन्न होने वाली गैसों यथा कार्बन डाई आक्साइड, सल्फर डाई आक्साइड आदि खतरनाक रूप से पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं।

वायु में अनेक प्रकार के सूक्ष्म जीव निवास करते हैं, पक्षियों का भी विचरण वायु द्वारा ही होता है। इसके अलावा सभी जीव जंतुओं और मनुष्यों की प्राणदायिनी ऑक्सीजन भी वायु से ही मिलती है। धरों, कारखानों से, पटाखों के जलाने इत्यादि से निकलने वाला धुआं वायु प्रदूषण का कारण बनता है जिससे अनेक छोटे बड़े जीवों का घात होता है और पर्यावरण को हानि पहुंचती है।

वनस्पति और सभी प्रकार के हरे पौधे, वृक्ष, फूल, फूल आदि भी सजीव हैं। वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु ने भी यह प्रमाणित किया कि हरे पौधों में जीवन होता है, संवेदना होती है। जैनागम में इन्हें एक इन्द्रिय जीव माना गया है। अनावश्यक रूप से पेड़ पौधों को तोड़ना, काटना, फूल पत्तियों को नुकसान पहुंचाना हिंसा है, साथ ही इससे पर्यावरण को भी हानि पहुंचती है। वृक्षों, जंगलों की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण में गंभीर असंतुलन होता है क्योंकि हरे पौधे और वृक्ष खाद्य श्रृंखला की प्रथम और सबसे अहम कड़ी होते हैं। इसकी हानि से संपूर्ण खाद्य श्रृंखला बुरी तरह प्रभावित होती है। जंगल अनेक जीव जंतुओं का आवास स्थल भी है जिनके नष्ट होने से जंगली जीव जंतुओं को आवास की समस्या हो रही है। परिणामस्वरूप अनेक जीव जंतुओं की प्रजातियां लुप्त हो रही हैं। जंगली पशु शहरों और धरों में प्रवेश कर मनुष्यों को हानि पहुंचाते हैं।

पर्यावरण विशेषज्ञों की मानें तो वातावरण में फैल रहे प्रदूषण के कारण समूची मानव जाति पर एक बड़ा संकट मंडरा रहा है। अगर इस पर समय रहते रोक न लगाई गई तो इसके और भी हानिकारक प्रभाव होंगे और संपूर्ण मानव जाति का अस्तित्व संकट में आ जायेगा। एक आम इंसान को भी इसका अहसास होने लगा कि मनुष्य ने प्रकृति को हर दृष्टिकोण से नुकसान पहुंचाया है। जंगलों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, वाहनों से रोजाना हजारों लाखों टन धुआं निकल रहा है जो हवा को प्रदूषित कर रहा है। कारखाने नदियों में जहरीला कचरा बहा रहे हैं तो कुछ बड़े राष्ट्र समुद्र में परमाणु परीक्षण करके उसे विषाक्त बना रहे हैं। मनुष्य के स्वार्थ का ही दुष्परिणाम है कि प्रकृति का संतुलन बिगड़ने लगा है। आज विश्व के सामने ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएँ चुनौती के रूप में खड़ी हैं। औद्योगिक गैसों के लगातार बढ़ते उत्सर्जन और वन आवरण में तेजी से हो रही कमी के कारण ओजोन गैस की परत का क्षरण हो रहा है। इस अस्वाभाविक बदलाव का प्रभाव वैश्विक स्तर पर हो रहे जलवायु परिवर्तनों के रूप में

दिखाई पड़ता है। सार्वभौमिक तापमान में लगातार होती इस वृद्धि के कारण विश्व के ग्लेशियर पिघलने लगे हैं। ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने के प्रभाव से महासागर के जलस्तर में ऐसी ही बढ़ती होती रही तो महासागरों का बढ़ता हुआ क्षेत्रफल और जलस्तर एक दिन तटवर्ती स्थल भागों और द्वीपों को जलमग्न कर देगा। इसका नतीजा समुद्र के किनारे बसे शहरों को भुगतना पड़ रहा है। इनसे वहां रहने वाले हजारों लाखों लोगों का जीवन प्रभावित हो रहा है।

जैन धर्म के जीव दया और अहिंसा के सिद्धांत प्राणी मात्र में अपनी आत्मा सम झलक देखते/दिखलाते हैं। अहिंसागुण के पांच सूत्र हैं जो पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों के समान ही जीवों और वातावरण के अन्योन्य संबंधों पर आधारित हैं। हिन्दू धर्मावलंबियों में कण कण में भगवान होने की बात करते हैं, तो अहिंसा का ही आशय होता है। सभी को सुख प्रदान करने के उद्देश्य से ही यह सूत्र देते हैं कि 'आत्मा सो परमात्मा' अर्थात् हर जीव में परमात्मा का अंश होता है इसीलिए जीव जंतु, पशु पक्षियों के साथ दया, करुणा का व्यवहार करने की शिक्षा दी जाती है। अहिंसा का अर्थ केवल किसी दूसरे जीव को न मारने से ही नहीं है वरन ऐसा वातावरण भी नहीं बनाएं कि दूसरे जीव मर जाएं। सारी बुराईयां किसी न किसी के लिए पीड़ादायक हिंसा बनती हैं। अतः सभी सदगुणों को अहिंसा में समाहित किया जा सकता है। यही प्रकृति का धर्म है अर्थात् अहिंसा पर्यावरण का संरक्षण विधान है।

भगवान महावीर के अहिंसा और अपरिग्रह सिद्धांत पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने में कारगर सिद्ध हो सकते हैं। जैन धर्म का सिद्धांत कहता है - संयम करो, भोग की सीमा करो। यदि व्यक्ति इस बात को अपना ले तो वनों का अनावश्यक विनाश, भूमि का दोहन आदि कार्यों से यथासंभव बचेगा जिससे वातावरण को प्रदूषित करने वाली कार्बनडाई ऑक्साइड का औसतन प्रमाण घटेगा और पर्यावरण प्रदूषण कम होगा। आज व्यक्ति परिग्रह की दौड़ में दौड़ रहा है और संसाधनों का असीम उपभोग कर रहा है परिणामस्वरूप पर्यावरण दूषित हो रहा है। उपभोग के साधनों का सीमाकरण, जैसे परिवहन के साधन, पानी-बिजली का संयम आदि से इस समस्या का समाधान संभव हो सकता है।

पर्यावरण को बचाने के लिए जो कार्य विद्वान और वैज्ञानिक आज कर रहे हैं वह कार्य हजारों वर्ष पहले से ही जैन धर्म करता आया है - जैसे कि पेड़ों को न काटना। आज विज्ञान जो बात बता रहा है, वह बात हमारे तीर्थंकरों ने हजारों वर्ष पहले दुनिया को बता दी थी। विज्ञान तो अठारहवीं शताब्दी तक यह भी नहीं जानता था कि पेड़ पौधों में भी जीव होता है जबकि जैन धर्म ने हजारों वर्षों पहले कहा था कि पेड़ मत काटिए, इनमें जीवन होता है। विज्ञान आज कह रहा है कि पटाखे मत छोड़िये, पर्यावरण बिगड़ता है। जैन धर्म के अनुसार पटाखों से वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है। शाकाहार भी अहिंसा का सर्वोत्तम उदाहरण है तो भगवान महावीर के 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत का पुरजोर समर्थन करता है। 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेशाम न समाचरेत' अर्थात् जो व्यवहार आपको पसंद नहीं वो दूसरों से भी नहीं करें। हर प्राणी को अपना जीवन प्रिय है, अतः अपने स्वार्थ और जीभ के स्वाद के लिए दूसरे जीव की हत्या न करें, न ही करवाएं। पर्यावरण संरक्षण के लिए भी शाकाहारी जीवन शैली सर्वोचित है। शाकाहारी व्यक्ति के कार्बन फुट प्रिंट कम होता है जो प्रदूषण कम करने में महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी ने भी पर्यावरण के संरक्षण के लिए अहिंसा को सर्वोपरि माना था। जैन धर्म में श्रावक और साधु अहिंसा व्रत का पालन करते हुए पर्यावरण के सभी जीवों से जाने अनजाने में हुई हिंसा के लिए प्रतिक्रमण द्वारा क्षमायाचना करते हैं और संपूर्ण विश्व की शांति के लिए भावना करते हैं

सर्वे पि सुखिनः संतु सर्वे संतु निरामयः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख मानुयात
जैनागम में बताया गया अहिंसा का सिद्धांत विश्व बंधुत्व और विश्व शांति के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। संसार के सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव से शत्रुता और अशांति खत्म होती है।

सर्वेशु मैत्री गुणिशु प्रमोद, कलिशतेषु जीवेषु कृपापरत्वम्
माध्यस्थ भाव विपरित वृत्तौ, सदा ममत्मा विद्वातु देव ।

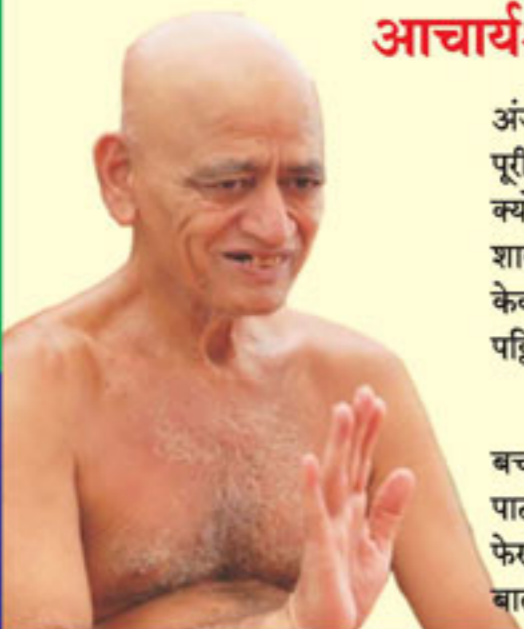
अर्थात् मेरा सभी जीवों से मैत्री भाव हो, गुणीजनों से ममता भाव हो, दुर्जनों से समता भाव हो। ऐसी भावना से विश्व में शांति और बंधुत्व बढ़ता है। आज पर्यावरण प्रदूषण और विश्व शांति किसी व्यक्ति या राष्ट्र विशेष की समस्या न होकर एक सार्वभौमिक चिंता का विषय बन गया है। परिस्थितिकीय असंतुलन हर प्राणी को प्रभावित करता है अतः यह जरूरी हो जाता है कि विश्व के सभी नागरिक पर्यावरण समस्याओं के सृजन में अपनी हिस्सेदारी को पहचानें और इन समस्याओं के समाधान के लिए अपना अपना सहयोग दें जिस पर अब विचार नहीं ठोस पहल की आवश्यकता है, अन्यथा जलवायु परिवर्तन, गर्माती धरती और पिघलते ग्लेशियर मानव जीवन के अस्तित्व को खतरे में डाल देंगे। यदि पर्यावरण को शुद्ध रखना है और विश्व में शांति चाहिए तो हमें जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह और संयम के सिद्धांतों को मानना पड़ेगा और उन पर चलना होगा। वस्तु पर्यावरण की समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब आवश्यकता, इच्छा और भोग के संयम का मूल्य समझ में आये।

दूसरे की वस्तुत या दूसरे राष्ट्र पर आधिपत्य की दुराकांक्षा का त्याग, अपरिग्रह का ही रूप है। संयम ही जीवन है, इसे अपनाएं। जीवन में दया, करुणा और अहिंसा का मार्ग अपनाएं। इसी से संपूर्ण विश्व में शांति होगी और शुद्ध पर्यावरण, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि प्राप्त हो सकेगी।

-अनुपमा जैन, सहसंपादिका



आचार्यश्री के मुखारबिंद से.... जो हंसी उड़ाते थे... वो भी आज जैन धर्म को मान रहे हैं...



अंजनी नगर में भारी भीड़ के बीच आचार्यश्री ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि मुझे याद है, बचपन में लोग हंसी उड़ाते थे कि ये जैन बनिए छानकर पानी पीते हैं। अब पूरी दुनिया छानकर पानी पी रही हैं। ये रात को खाना नहीं खाते। अब दुनियाभर के डॉक्टर सलाह दे रहे हैं कि सोने के तीन घंटे पहले दिन में ही खाना खा लेना चाहिए, क्योंकि सूरज की अंतिम किरण डूबने के बाद खाने में बैक्टीरिया पैदा होने लगते हैं। लोग मजाक में कहते थे - ये घास फूस खाते हैं। अब डॉक्टर सलाह दे रहे हैं कि शाकाहारी रहना चाहिए। पूरी दुनिया में स्वस्थ एवं लंबी जिंदगी जीने के लिए शाकाहार पर जोर दिया जा रहा है क्योंकि दुनियाभर में फैलने वाली वायरसजनित बीमारी केवल मांसाहार से फैलती है। जैन दर्शन पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है, जो ये बात सिखलाता है कि अच्छा जीवन जीने के साथ अच्छी मृत्यु को कैसे प्राप्त करें... लोग मुख पर पट्टिका (मुंहपत्ती) पहनने में शर्माते थे। अब कोरोना वायरस के कारण दिन भर मुंह पर कपड़ा लगाकर रहते हैं।

बच्चों की पहली पाठशाला घर में मिले संस्कार से शुरु होती है....

बच्चों की पहली पाठशाला उसके घर के संस्कार से शुरु होती है। जीवन में संस्कार की पाठशाला कहां से शुरु होती है, एक मां बच्चे को लेकर मंदिर में आती है। पाठशाला शुरु हो जाती है। नमोस्तु करती है और बच्चे को अर्थ बताती है कि नमोस्तु का अर्थ धोक देना होता है। बच्चा देखता रहता है कि मां नमोकार की माला फेरती रहती है। माला पूर्ण होने के बाद जब मां उठी तो बेटा भी उठ गया। इसे कहते हैं पाठशाला। संस्कार इसे कहा जाता है कि जैसा आप करेंगे वो बच्चे करेंगे। यह बात आचार्य श्री ने एमजी रोड स्थित उदासीन आश्रम में अपने प्रवचन में कही।